Shodh International: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Vol. 1, Issue – 2015

संत कवि तिरुवल्लुवर व आपा पंथ के कवियों की धार्मिक मान्यताओं का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ0 प्रीति*

भारतीय साहित्य एवं संस्कृति की परम्परा में तमिल कवि तिरुवल्लुवर और उनके ग्रन्थ 'तिरुक्कुरल' का विशेष स्थान है। देश और विदेश के अनेक विद्वानों ने 'तिरुक्कुरल' की प्रशंसा करते हुए इसे मानव के उच्चतम् व पवित्रतम् भावों की अभिव्यक्ति माना है। तिरुवल्लुवर में 'तिरु' शब्द आदर सूचक उपसर्ग है, मूल नाम 'वल्लुवर' है। इनके ग्रन्थ का नाम 'तिरुक्कुरल' है। यह एक मुक्तक काव्य है। मुक्तक रचना का प्रत्येक पद स्वतंत्र रूप से पूर्ण अर्थ का द्योतक होता है। 'तिरुक्कुरल' का प्रत्येक पद स्वतंत्र अर्थ का द्योतक होते हुए भी विषय की दृष्टि से धारावाहिक है। प्रत्येक पद पूर्व पद से, प्रत्येक अध्याय पूर्व अध्याय से सूक्ष्म रूप में संपृक्त है।

तिरुवल्लुवर के जन्म–समय, स्थान एवं रचना–काल के विषय में कुछ भी निश्चित कह पाना अत्यन्त दुष्कर कार्य है। डॉ0 जी0यू0 पोप ने इनका जन्म आठवीं से दसवीं शताब्दी माना है तथा उन पर ईसाई धर्म का विशेष प्रभाव माना है। कुछ विद्वान् इस मत का खंडन करते हैं। श्री नीलकंठ शास्त्री, श्री वैयापुरी पिल्लै तथा श्री जेसुदास ने इनका समय पाँचवी से छठी शताब्दी माना है तथा अन्य अनेक विद्वानों ने इनका जन्म समय ईसा की द्वितीय शताब्दी माना है, जिनमें श्री के0एन0 शिवराज पिल्लै, टी0एस0 कंदसामी मुदलियार, बी0आर0 रामचन्द्र दीक्षितार, श्री पूर्ण समासुंदरम, डॉ0 ओमप्रकाश, श्री टी0पी0 मीनाक्षी आदि सम्मिलित हैं।

'तिरुक्कुरल' ग्रन्थ का अनुवाद हिन्दी के अतिरिक्त अनेक भारतीय भाषाओं तथा अंग्रेजी व विविध विदेशी भाषाओं–जर्मन, फ्रेंच, लैटिन, सिंहली आदि में भी किया गया है। 'तिरुक्कुरल' एक मुक्तक काव्य है, यह ग्रन्थ तीन भागों में विभक्त है। धर्म (अरम्), अर्थ (पोरुल), काम (इबनम्)।

'तिरुक्कुरल'के धर्म–खण्ड में प्रस्तावना, ईश–वन्दना, वर्षा–वैशिष्ट्य, संन्यासी का महत्त्व, गृहस्थ, पत्नी के गुण, संतति, स्नेह, सम्पन्नता, आतिथ्य, मधुर भाषण, कृतज्ञता, संयम, सदाचार, पर–स्त्री वर्जन, सहनशीलता, ईर्ष्या न करना लोभ न करना, चुगली न करना, व्रत, प्रलाप न करना, शिष्टाचार, दान, यज्ञ आदि विषयों का विवेचन है। धर्म–खंड के दूसरे अंश में संन्यास धर्म–दयालुता, मांसाहार का निषेध, तपस्या, चोरी न करना, दुराचार न करना, सत्य भाषण, अक्रोध, अहित न करना, अहिंसा, स्थिरता, तत्त्वज्ञान, तृष्णा, दमन आदि विषयों का विवेचन है।

*हिन्दी विभाग, हिन्दू कन्या महाविद्यालय, सीतापुर–261001 (उ0प्र0)
E-mail Id: dr.priti_hkm@yahoo.com

© Eureka Journals 2015. All Rights Reserved. **ISSN: 2581-3501**

प्रस्तुत शोध पत्र का लक्ष्य तमिल साहित्य के सुप्रसिद्ध कवि तिरुवल्लुवर व हिन्दी साहित्य के उत्तर–मध्य–काल के संत कवि आपा साहब व उनके पंथ के कवियों की धार्मिक मान्यताओं का तुलनात्मक अध्ययन है। प्रस्तुत शोध पत्र में संतकवि तिरुवल्लुवर के ग्रन्थ 'तिरुक्कुरल' के एम0जी0 वेंकट कृष्ण द्वारा किये गए हिन्दी अनुवाद तथा आपा पंथ के हस्तलिखित साहित्य को अध्ययन का आधार बनाया गया है।

हिन्दी साहित्य के उत्तर–मध्यकाल के संत कवि आपा साहब (1740–1830 ई0) का जन्म उत्तर प्रदेश के लखीमपुर–खीरी जनपद स्थित धौरहरा तहसील के मड़वा नामक ग्राम में हुआ था, जो कि तराई क्षेत्र होने के कारण घोर जंगलों से आछन्न था। ऐसे स्थान पर जन्म पाकर भी आपा साहब ने अनेक तीर्थ यात्राएं कीं व सुदूर क्षेत्रों का भ्रमण कर अपने ज्ञान के प्रकाश से मानवता को आलोकित करने का सफल प्रयास किया। इनका मूल नाम मुनिदास था। उनकी कृतियों में 'आपा' शब्द आत्म अर्थ का बोधक है। किन्तु, इनके अनुयायियों ने इनके लिये 'आपा साहब' शब्द का प्रयोग किया है तथा इनके पंथ को 'आपा पंथ' कहा। ये स्वर्णकार कुल में उत्पन्न हुए थे और स्वयं को ही अपना गुरु मानते थे। इनकी प्रमुख रचनाओं को 'नव ग्रंथा' नाम से संकलित किया गया है। जिसमें कुल नौ ग्रंथ हैं। बोधपरमारथ, प्रेम गुंजरी, सुरसुती, जलमतत्त, जोगनासिका, राजनीति, जोगसंदी, केवलगीता, विवेख रतन। आपा साहब एवं उनके पंथ के अन्य परवर्ती कवियों की रचनाओं का विशाल संग्रह आज भी हस्त–लिखित रूप में विद्यमान है।

इनके काव्य में धर्म शब्द का प्रयोग संपूर्ण जीवन–दर्शन के व्यवहारिक एवं सैद्धांतिक पक्ष को निदर्शित करता है। आपापंथ के काव्य का अनुशीलन करने पर धर्म के निम्नलिखित रूप प्राप्त होते हैं।

1. साधारण–धर्म
2. वर्ण–धर्म
3. आश्रम–धर्म
4. राज–धर्म
5. स्त्री–धर्म

भारतीय धर्म और दर्शन में प्राचीन काल से ही विद्वानों ने चार पुरुषार्थ माने हैं–धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। संत कवि तिरुवल्लुवर के ग्रंथ में धर्म, अर्थ और काम का विस्तृत विवेचन मिलता है। आपा पंथ के कवियों ने कबीर आदि संत कवियों की भाँति जीवन का परम लक्ष्य मोक्ष अथवा परमानंद की प्राप्ति माना है। अतः इनके काव्य में धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष पुरुषार्थ चतुष्टय का विवेचन हुआ है। मनुस्मृति में कहा गया है कि धर्म से अर्थ, काम, मोक्षादि सभी सुख मिलते हैं। महाभारत में कहा गया है कि लोक की रक्षा नैतिक नियमों तथा सदाचार से होती है, यह धर्म के अंग हैं। साधारण धर्म से तात्पर्य धर्म के उस रूप से है, जो मानव मात्र के हित का साधक हो। मनुस्मृति में धर्म के दस लक्षणों का वर्णन मिलता है।

अहिंसा

अहिंसा को परमधर्म कहा गया है। संत कवि तिरुवल्लुवर ने अहिंसा को मूलधर्म

© Eureka Journals 2015. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

मानते हुए प्राणियों के प्रति दया का संदेश दिया है। उनका मानना है कि हिंसा कर्म से मनुष्य को रोग और दारिद्रय की प्राप्ति होती है (कुरल–330)। वे मांसाहार–निषेध एवं अहिंसा पर विशेष बल देते हैं। आपा साहब ने भी आमिष–भोग और हिंसा का निषेध कर जीव–हिंसा करने वाले हिंदुओं एवं मुसलमानों को प्रबल स्वर में फटकारा है–

''हिंदू तुरक दुनौ सिर धूनै माला तसबी दूनौ घूमै।
फिर बौरे वै ऐसी कारैं, नहकी जीव मारि के धारैं।
काया पोखैं करैं सेवादा, दुनौ दीन की तिथि अवादा।
मारि जीव कै भक्षन करैं, जलम–जलम कुस्ठी तन धरैं।''

(आपा साहब, राजनीति–पंक्ति 454–457)

सत्य

सत्याचरण धर्म का मूल है। संत कवि तिरुवल्लुवर ने सत्य–आचरण उसे माना है, जिससे किसी को कष्ट या हानि न हो (कुरल 291)। संत कवि आपा साहब का मानना है, कि सत्य–धर्म का पालन करने वाला इस संसार के प्रत्येक कण में परमात्मा के दर्शन करता है–''सत्य–धर्म जो बसै सरीरा, घट–घट ख्याल करै सब तीरा।'' (आपा साहब, जोगसंदी–पं0 सं0–12)।

धृति–इंद्रियों पर नियंत्रण के लिये धैर्य अति आवश्यक है।

क्षमा–क्षमा क्रोधाग्नि में दग्ध व्यक्ति को शीतलता प्रदान करती है। क्षमावान व्यक्ति की समस्त आशाएं एवं तृष्णाएं विलीन हो जाती हैं (आपा साहब–जोगनासिका, पंक्ति सं0–324) तिरुक्कुरल में पद सं0–151 से 160 तक क्षमाशीलता का वर्णन है।

दम–दम का तात्पर्य है, आत्मनियंत्रण। आपा पंथ के कवियों ने आत्मनियंत्रण पर बल दिया है। इस निरंकुश मन को ज्ञान के अंकुश से ही नियंत्रित किया जा सकता है। तिरुवल्लुवर ने आत्म–संयम की महिमा का गायन किया है। उनके अनुसार संयमित व्यक्ति का यश पर्वत के समान दृढ़ होता है (कुरल–124)। इन्होंने आत्म–संयम पर विशेष बल दिया है। 'तिरुक्कुरल'में पद संख्या 121 से 130 तक संयमशीलता का वर्णन किया गया है।

अस्तेय–अस्तेय का अर्थ है, चोरी न करना। आपा–पंथ के कवियों ने तन और मन दोनों से पूर्णरूपेण चोरी से दूर रहने का उपदेश दिया है। 'तन चोरी लक्षण परिहरहू, मन चोरी नहिं राखौ कबहूं' (आपायन, भाग–2 दोहा–12 के बाद चौपाई–5)। संत कवि तिरुवल्लुवर ने चोरी के कर्म को अत्यंत हेय माना है। उन्होंने पद संख्या 281 से 290 तक अस्तेय का विवेचन किया है।

शौच–संत कवि आपा साहब ने आंतरिक शुचिता पर अत्यधिक बल दिया है। वे बाह्य पवित्रता के स्थान पर आंतरिक पवित्रता को आवश्यक मानते हैं।

धीः का तात्पर्य है तत्त्वज्ञान। आपा पंथ के संतों ने तत्त्वज्ञान को जीवन का परम लक्ष्य माना है। संत कवि तिरुवल्लुवर ने कुरल में पद सं0–351–360 तक तत्त्वज्ञान को जीवन में सफलता हेतु आवश्यक माना है।

© Eureka Journals 2015. All Rights Reserved.
ISSN: 2581-3501

विद्या–विद्या का तात्पर्य है आत्मज्ञान। संत कवि आपा साहब ने आत्मज्ञान की खोज साधक का परमलक्ष्य माना है। वे मानते हैं कि आत्मा इस संसार में सर्वत्र विद्यमान है। यह संसार आत्मरूप ही है। जो इसे जान लेता है, उसका आवागमन समाप्त हो जाता है–

''आपा चंदा आपा सुरिजा, आपा जल–थल पवना।
मुनिदासा आपा खोजैं, मिटिगा औना पौना।।''

संत तिरुवल्लुवर का मानना है आत्मज्ञान से मोक्ष की प्राप्ति होती है। (कुरल–357)

अक्रोध–क्रोध न करने से मन निर्मल होता है (सुरसुती पं0सं0–363)। तिरुवल्लुवर जी का मानना है कि क्रोधी व्यक्ति मृतक के समान है, जो व्यक्ति क्रोध से मुक्त है उसे मनवांछित वस्तुएं तत्काल प्राप्त हो जाती हैं (कुरल–309, 308)।

आपा पंथ के कवियों ने **इंद्रिय–निग्रह** पर अत्यंत बल दिया है। तिरुवल्लुवर संन्यासी के लिये इंद्रिय–निग्रह को आवश्यक मानते हैं (कुरल–24)।

लोभ के कारण व्यक्ति धर्म–पथ से विमुख हो जाता है। इसलिये निर्लोभता को भी आवश्यक माना गया है। लोभी व्यक्ति में पाँच अवगुण सदा विद्यमान रहते हैं–दंभ, द्रोह, निंदा, पिशुनता, मत्सर। संत कवि आपासाहब ने ज्ञान विवेक एवं क्षमा से लोभ को दूर करने की बात कही है (राजनीति, पं0सं0–570)। तिरुवल्लुवर ने अपने ग्रंथ 'तिरुक्कुरल' में कहा है कि लोभी व्यक्ति का सर्वनाश हो जाता है तथा जो व्यक्ति लोभ रहित है, वह श्री, सम्पत्ति और परमसुख का भोग करता ह (कुरल पद सं0–171 से 180)। संत कवि तिरुवल्लुवर ने निर्धन अथवा पीड़ित को दी गयी सहायता को सबसे बड़ा **दान** माना है । वे गृहस्थ के लिये दान आवश्यक मानते हैं (कुरलपद सं0 221–230)। आपा साहब ने ज्ञानदान को सबसे बड़ा दान माना है। तिरुवल्लुवर जी **दया** को सभी धर्मों में श्रेष्ठ मानते हैं। दया हीन व्यक्ति का इह लोक तथा परलोक समस्त नष्ट हो जाते हैं। (कुरल 241–250)

आपा साहब तथा संत कवि तिरुवल्लुवर कर्त्तव्य–पालन व सदाचार को महत्त्व देते हैं। समाज और परिवार के लिये मनुष्य के कुछ नैतिक कर्त्तव्य हैं, जिनका पालन धर्म कहलाता है। मधुर–भाषण, मितभाषण, पाप–भीरुता, चुगली न करना, कृतज्ञता, पर निंदावर्जन आदि विषयों में इन कवियों ने अपने सुसंगत विचार व्यक्त किये हैं। इन कवियों ने मिथ्याचार तथा बाह्याडम्बर का विरोध किया है।

आपा पंथ के कवियों में श्री लक्ष्मणदास जी ने अपनी कृति 'आपायन' में **वर्ण–धर्म** का विस्तृत वर्णन करते हुए कर्मानुसार वर्ण–व्यवस्था को स्वीकार किया है। संत तिरुवल्लुवर के काव्य में वर्ण–व्यवस्था की चर्चा नहीं प्राप्त होती है।

आश्रम धर्म

भारतीय संस्कृति में चार आश्रमों की चर्चा मिलती है–ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास। यह आश्रम व्यक्ति को विकास के क्रमिक अवसर प्रदान करते हैं। तिरुवल्लुवर जी आश्रम धर्म को मानते हुए सभी आश्रमों

© Eureka Journals 2015. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

में आसक्ति रहित रहने का संदेश देते हैं (कुरल–341)। उन्होंने सभी आश्रमों में गृहस्थाश्रम को श्रेष्ठ माना है। गृहस्थ का निर्माण पति–पत्नी एवं संतति से होता है। दांपत्य सूत्र में आबद्ध पति–पत्नी एक दूसरे के पूरक हैं। संतुलन के लिये इनका पारस्परिक प्रेम एवं विश्वास अत्यंत आवश्यक है। पति–पत्नी का प्रेम ही सामाजिक धरातल पर अनेक रूपों में प्रस्फुटित होता है। तिरुवल्लुवर जी प्रवृत्ति मार्गी जीवन–दर्शन का प्रतिपादन करते हैं। कवि ने समाज में गृहस्थ का स्थान सर्वोपरि स्वीकार किया है। ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ, संन्यास इन तीनों आश्रमों से गृहस्थ आश्रम श्रेष्ठ है, क्योंकि यह तीनों आश्रम तो गृहस्थ पर ही आश्रित हैं (कुरल–41) । निर्धन, निराश्रित व मृतक भी इसी गृहस्थ की सहायता प्राप्त करते हैं (कुरल–42)। धर्म–कार्य करते हुए वैवाहिक जीवन व्यतीत करने वाला व्यक्ति देवतुल्य है (कुरल–57)। स्वयं धर्म पूर्वक जीवन यापन करना व अन्य को प्रेरणा देना गृहस्थ का परम–कर्त्तव्य है। आपा पंथ के कवियों ने भी गृहस्थाश्रम को चारों आश्रमों में सर्वश्रेष्ठ माना है। वे कहते हैं कि सभी देवताओं ने गृहस्थ आश्रम को अपनाया है। शिव, राम, कृष्ण आदि ने गृहस्थ जीवन का आदर्श प्रस्तुत किया है (आपा साहब–'गएबगिरी गुष्टि'–पंक्ति संख्या–197, 198)। गृहस्थ के कार्यों में अतिथि सेवा को अत्यधिक महत्त्व दिया गया है। आपा साहब ने गृहस्थ धर्म की दृढ़ता को बताते हुए कहा है कि पर–स्त्री–रत पुरुष चौरासी लाख योनियों में भटकता रहता है (राजनीति, पं0 सं0–120)।

राज धर्म

जैसा कि पूर्व में कहा जा चुका है कि तिरुवल्लुवर जी का ग्रंथ–तीन भागों में विभक्त है–धर्म, अर्थ और काम। तिरुवल्लुवर जी ने अर्थ (पोरुल) के अन्तर्गत राजधर्म का विस्तृत विवेचन किया है। कवि ने शासन–व्यवस्था व सामाजिक जीवन के विभिन्न अंगों का विस्तृत विवेचन किया है। राज्य, राजा के गुण, मंत्री, दूत, गुप्तचर, राजकोष, सैन्य–व्यवस्था, दुर्ग, मैत्री, सुशासन, कुशासन, सम्राट से सहयोग, सभा को समझना, सभा में निर्भीकता, धनबल, सैन्य–निरूपण, सैन्य–शौर्य आदि विषयों पर उनके विचारों को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि कवि तिरुवल्लुवर सुशासन व्यवस्था के लिये सुनियोजित ढंग से विचार करते हैं। वे राजनीति का पूर्ण ज्ञान रखते थे और राज्य के लिये कल्याणकारी योजनाओं और नीतियों का निर्माण करते हैं वे न केवल राज्य–व्यवस्था अपितु, समाज–व्यवस्था के लिये आवश्यक नीति का भी विधान करते हैं। समाज में सम्मान योग्य बनने के लिये जिन गुणों की आवश्यकता है, उनका विवेचन करते हुए कवि ने मनुष्य के उन दोषों का दिग्दर्शन भी कराया है, जो समाज के हित में नहीं है। अतः उन्होंने राजधर्म के दोनों पक्षों अर्थात राजा का धर्म और प्रजा का धर्म का सुन्दर निरूपण किया है। संत तिरुवल्लुवर के विचार समाज में अनुकरणीय हैं। अर्थ–खण्ड में कुल 70 विषयों का विवेचन हुआ है, जो कि 580 पदों में निबद्ध हैं। संत आपा साहब के काव्य में राजनीति उस नीति का प्रतीक है, जो कि मानव–जीवन को अपने

© Eureka Journals 2015. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

परम लक्ष्य की प्राप्ति कराये। आपा पंथ के कवियों में श्री लक्ष्मणदास जी ने अपने ग्रंथ 'आपायन' में राजा के धर्मों का उल्लेख किया है।

स्त्री–धर्म

कवि तिरुवल्लुवर ने 'सहधर्मिणी' के गुण शीर्षक अध्याय में पत्नी–धर्म के सम्बन्ध में विचार व्यक्त किये हैं। वे ऐसी पत्नी को श्रेष्ठ मानते हैं, जो परिवार की मर्यादा का पालन करे तथा पति की आय के अनुसार व्यय करे (कुरल–51)। प्रातः काल उठ कर पूजा करे (कुरल–55)। सतीत्व की रक्षा करते हुए पति एवं परिवार के प्रति अपने दायित्व को पूरा करे (कुरल–56)। ऐसी स्त्री संसार का स्वर्ग, वैभव प्राप्त कर लेती है (कुरल–58)। पत्नी के सद्गुणों से ही गृहस्थ जीवन में सफलता मिलती है।

प्राचीन काल से ही हमारे देश में धर्म पूर्वक अर्थ और काम को ग्रहण करना मानव जीवन का लक्ष्य बताया गया है। कविवर तिरुवल्लुवर ने कुरल के काम–खंड में धर्म सम्मत काम की अभिव्यक्ति की है, जो गृहस्थ धर्म की सीमा में सांसारिक सुख की प्राप्ति के लिये आवश्यक है। इस खंड में श्रृंगार के संयोग–वियोग दोनों ही पक्षों का वर्णन है। कवि ने संयोग–श्रृंगार का वर्णन करते हुए सर्वत्र मर्यादा का ध्यान रखा है तथा वियोग–पक्ष का वर्णन भी अत्यंत मनोयोग से किया है। धर्म–खंड के संतान–लाभ अध्याय में कवि का कथन है कि मनुष्य के लिये संतान से बढ़ कर कुछ नहीं है (कुरल–61)। संतान अनेक पुण्य कर्मों के फल–स्वरूप ही प्राप्त होती है (कुरल–62)। पिता का कर्त्तव्य संतान को विद्वानों की सभा में प्रथम पंक्ति में बैठने योग्य बनाना है (कुरल–67)। पुत्र की विद्वता की प्रशंसा सुन कर माता का ह्रदय गदगद हो जाता है। (कुरल–69)। आपा–पंथ के कवियों ने स्त्री को पूजनीय एवं पवित्रतम स्नेह–वात्सल्य से युक्त कहा है। पति के प्रति प्रीति तथा पति की सेवा को एकमात्र स्त्री–धर्म माना है। पतिव्रता नारी पति की आज्ञा का पालन करती है और उसकी परमात्मा की भाँति पूजा करती है। पति परमेश्वर को पाकर वह अन्य किसी देवता की पूजा नहीं करती। उसका धर्म पति के अतिरिक्त अन्य पुरुष को पिता व पुत्र के समान देखना है (हंस प्रमोद–केदारदास, अध्याय–14)। इन कवियों ने जहाँ स्त्री का धर्म पति की सेवा माना है, वहाँ पुरुष का धर्म भी पत्नी का पालन–पोषण स्वीकार किया है। पति और पत्नी दोनों में एक ही परमात्मा निवास करता है अतः कोई उच्च या निम्न नहीं है। नर–नारी के आंतरिक संबंधों की प्रबलता दोनों को एकात्म बना देती है। दोनों अपने धर्म का पालन करते हुए सहज ही निर्मल भक्ति को प्राप्त करते हैं (केदारदास, हंस प्रमोद–खंड–7)। आपा पंथी केदारदास जी ने अपने हंस–प्रमोद नामक ग्रंथ में पुत्र का धर्म माता–पिता की सेवा माना है। स्वयं आपा साहब ने भी राजनीति नामक ग्रंथ में–''मात–पिता सेवा नहिं करैं। ते वहि जीव नरक मां परैं।'' कह कर पुत्र के धर्म का निरूपण किया है (राजनीति, पं0 सं0–84)।

सामाजिक व्यवहार एवं सामाजिक संबंधों का चित्रण करते हुए कवि तिरुवल्लुवर ने सत्संगति की महिमा का भी चित्रण किया

© Eureka Journals 2015. All Rights Reserved.
ISSN: 2581-3501

है। लोक–व्यवहार, सत्संग, सत्कर्म, दान, मर्यादा पालन आदि का निरूपण करते हुए कवि ने शत्रुओं पर विजय प्राप्ति का मार्ग भी वर्णित किया है। कवि का कथन है कि शत्रु के दोष देखकर बुद्धिमान तुरन्त वहीं क्रोध को व्यक्त नहीं करते उस ज्वाला को उचित अवसर के लिये मन में संजोए रखते हैं (कुरल 487)। प्रतीक्षा के समय सारस की भाँति शांत रह कर अवसर आने पर आक्रमण करना उचित है (कुरल 490)। मूढ़ता, अहंकार, नीचता आदि दोषों का विवरण कुरल में प्राप्त होता है। सम्पत्ति का अनुचित संग्रह, दरिद्रता, याचना आदि विषयों को भी कवि ने चित्रित किया है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि तमिल कवि तिरुवल्लुवर का काव्य समाज को जीवन–दृष्टि प्रदान करता है। तमिल साहित्य में तिरुवल्लुवर जी को विशेष स्थान प्राप्त है और उनकी रचना 'तिरुक्कुरल' को तमिल वेद कहकर सम्बोधित किया गया है। उन्होंने अपने ग्रंथ में धर्म, अर्थ एवं काम की विवेचना करते हुए समाज–दर्शन एवं जीवन–दर्शन का निदर्शन कराया है। तुलनात्मक दृष्टि से देखें, तो आपा पंथ के कवियों तथा संत कवि तिरुवल्लुवर के काव्य का परम लक्ष्य मनुष्य को उसके वास्तविक ध्येय तक पहुँचाना है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिये नैतिक आचरण प्रथम चरण है, अतः उनके काव्य में आध्यात्मिक–समाजवाद की प्रतिष्ठा की गयी है। इन कवियों ने अपने जीवन के आदर्शों को कविता के माध्यम से सरल, सरस सहज एवं सुखद बना कर जन–जन तक संप्रेषित किया है। ये कवि तत्त्वदृष्टा कर्म–योगी साधक एवं संत थे। दोनों महान् कवियों के समय और स्थान में अत्यधिक अंतर होने पर भी इन सीमाओं से परे ये कवि मानवता के दिग्भ्रम दूर करने के लिये तत्पर दिखायी देते हैं। यह भारत की सांस्कृतिक एकता एवं अखण्डता का साक्षात् दर्शन है। भारतीय दार्शनिकों एवं चिन्तकों की सर्जनाओं में चिरकाल से प्रवहमान मानव–मात्र के कल्याण की भावना दोनों कवियों के काव्य में अनुस्यूत है तथा भारत की राष्ट्रीय एकता की धरोहर है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. आपा पंथ साहित्य–अप्रकाशित (हस्तलिखित ग्रंथ)
2. संत कवि तिरुवल्लुवर एवं कबीर का तुलनात्मक अध्ययन–डॉ0 रविंद्र कुमार सेठ प्रकाशक–नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 23, दरियागंज–दिल्ली।
3. तिरुक्कुरल का हिन्दी अनुवाद–एम0जी0 वेंकट कृष्ण प्रकाशक–शक्ति फाइनेंस लिमिटेड मद्रास।
4. मनुस्मृति (मन्वर्थ मुक्तावली टीका सहित–मणिप्रभा)। प्रकाशक–चौखंबा संस्कृत सीरीज ऑफिस वाराणसी–1 सं0 2026 विक्रम।
5. आपा पंथ काव्य एवं दर्शन–डॉ0 प्रीति, प्रकाशक–अकादमिक प्रतिभा, नई दिल्ली–2008.

© Eureka Journals 2015. All Rights Reserved.
ISSN: 2581-3501